ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 164-166
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

गोरखपुर मण्डल के औद्योगिक विकास स्तर का अध्ययन

अरविन्द कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर– भूगोल विभाग, संत विनोबा पी0जी0 कालेज, देवरिया (उ0प्र0), भारत

सारांश : ***आधुनिक युग औद्योगिकरण का युग है। औद्योगीकरण का आर्थिक विकास एवं सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रमुख स्थान होता है। औद्योगिकरण का स्तर न केवल जनसंख्या एवं उपलब्ध संसाधनो के संतुलन को निर्धारित करता है बल्कि क्षेत्र विशेष की संस्कृति को भी प्रभावित करता है। औद्योगीकरण को किसी राष्ट्र की सम्पन्नता एवं प्रगति का केवल आधार ही नही वरन उस के आर्थिक विकास का उपयुक्त मापदण्ड भी माना जाता है। वर्तमान समय में विश्व का लगभग प्रत्येक राष्ट्र औद्योगीकरण की ओर बढ़ रहा है क्यों कि विकासशील राष्ट्रों के आर्थिक पिछड़ेपन व बेरोजगारी दूर करने का एक साधन माना जाने लगा है। औद्योगीकरण वह प्रक्रिया है जो विकास को निर्देशित करता है। औद्योगीकरण समय की मांग है जिसे पूरा किए बिना प्रगति की दौड़ में आगे बढ़ना असम्भ्व है। विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में औद्योगीकरण की मात्रा एवं उस की गहनता सर्वत्र समान नहीं पायी जाती है। उस मे क्षेत्रीय संसाधन उपलब्धता, संगठनात्मक प्रतिरुप, राजनैतिक विचारधारा, ऐतिहासिक अवस्था, अवस्थापनात्मक तत्वों के विकास की भिन्नता, स्थानीय भौगोलिक दशाएँ, परम्पराएँ, मान्यताएँ आदि के कारण विभेदीकरण पाया जाता है। व्यापक अर्थ में औद्योगीकरण आर्थिक प्रगति एवं ऊँचे जीवनयापन के स्तर की कुंजी है।***

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

औद्योगीकरण का अर्थ– औद्योगीकरण शब्द का प्रयोग विनिर्माण एवं निर्माण करने वाली इकाइयों के संदर्भ में किया जाता है। औद्योगीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिस के अन्तर्गत सम्पूर्ण उत्पादन कार्यो में परिवर्तन की एक श्रृंखला का जन्म होता है। इस प्रकिया के अन्तर्गत वे समस्त परिवर्तन होते है जो किसी उपक्रम के मशीनीकरण, किसी नवीन उद्योगों की स्थापना किसी नवीन बाजार में प्रवेष तथा किसी नये प्रदेश के विदोहन के फलस्वरुप घटित होते हैं। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो पूँजी को गहनता प्रदान करने के साथ उसे ब्यापकता भी प्रदान करती है। औद्योगीकरण उद्योग षब्द से बना है किन्तु आधुनिक संदर्भ में उद्योग और औद्योगीकरण विभिन्न विचारधाराओं के यथार्थ बन चुके है। इस प्रकार उद्योगों की श्रृंखला जब ब्यापक रुप धारण कर लेती है तो यह एक प्रक्रिया बन जाती है जिसे औद्योगीकरण कहा जाता है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया में निर्माण उद्योग के साथ–साथ अन्य आर्थिक क्रियाओं का विकास अनिवार्य रुप से करना पड़ता है। निर्माण उद्योग के लिए कच्चे माल, शक्ति, पूँजी उपलब्ध कराने के लिए बैंकिंग एवं बीमा उद्योग की उपलब्ध ता, भण्डार गृह तथा संदेश वाहन के साधनों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार औद्योगीकरण से ऐसे संरचनात्मक परिवर्तन किए जाते हैं जिससे उस क्षेत्र मे प्राकृतिक संसाधनो का अभिष्ट उपयोग सम्भव किया जा सके। ऊर्जा के यांत्रिक संचालनों, कृषि व खनिज संसाधनो के समुचित उपयोग द्वारा भारी धातु व मशीन उद्योग का निर्माण तथा पूँजी के गहन उपयोग से वृहद पैमाने पर सेवाओं वस्तुओं का उत्पादन सम्भव अनाया जा सकता है। औद्योगीकरण में अधिक पूँजी, उत्तम तकनीक, विशेषीकरण व श्रम गतिशीलता जुड़ी हुई है। इस अर्थ में औद्योगीकरण का सम्बन्ध उन व्यावसायिक इकाइयों की उत्पादन संरचना से लगाया जाता है जिस के अन्तर्गत विभिन्न इकाइयों के मध्य श्रम विभाजन एवं विषेषीकरण पाया जाता है और यह विषेषीकरण प्रौद्योगिकी, मषीन, विद्युत, शक्ति को मानवीय श्रम के स्थान पर तथा प्रति इकाई लागत कम करने के उद्देश्य से प्रेरित होता है।

अध्ययन क्षेत्र– यह क्षेत्र विशाल सिंधु–गंगा द्वारा निक्षेपित अवसादों से निर्मित मैदान का एक छोटा संकरा भाग है जिस के निर्माण में घाघरा, गंडक, राप्ती एवं छोटी गंडक नदियों का महत्वपूर्ण योगदान है। अवसादों का निक्षेपण उत्तर दिशा में स्थित गोरखपुर गर्त में 8000 मीटर की गहराई तक विद्यमान है। यहाँ कंकड़ निर्माण कदाचित ही दृष्टिगत होता है क्यों कि खादर भूमि की इस क्षेत्र में बहुलता है। गोरखपुर मण्डल 600–06′ उत्तरी से 270–29′ उत्तरी अक्षांश तथा 830–05′ पूर्व से 840–26′ पूर्वो देशान्तर के महत्व स्थित है। लगभग समान अक्षांशीय (1.0′–23′) तथा देशान्तरीय (1.00–21′) विस्तार के कारण इस की आकृति एक चतुर्भुज सदृष्य है जिसके चारो कोण चारों दिशाओं में एवं भुजाएं कोणीय दिशाओं में स्थित है। यह मण्डल 11819 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर विस्तृत उत्तर प्रदेष के सम्पूर्ण क्षेत्रफल (294411 वर्ग किमी०) के 4. 01: भाग को घेरे हुए है। जिस की उत्तर से दक्षिण अधिकतम लम्बाई 165 किमी० तथा पूर्व से पश्चिम अधिकतम चौड़ाई 150 किमी० है। मण्डल का मुख्यालय गोरखपुर मध्य गंगा घाटी के सरयूपार मैदान क राप्ती एवं रोहिन नदियों के संगम पर राप्ती

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

नदी के बाँए (पूर्वी) किनारे पर सागरतल से 102 मीटर की ऊँचाई पर लखनऊ–बरौनी मुख्य रेलमार्ग पर स्थित है।

गोरखपुर मण्डल की उत्तरी सीमा भारत नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा है जो तराई क्षेत्र में स्थित है। उत्तरी पूर्वी एवं दक्षिणी पूर्वी सीमाएँ बिहार राज्य की पश्चिमी सीमा से निर्धारित होती है। इस की पश्चिमी सीमा सिद्धार्थनगर, संत कबीर नगर एवं अम्बेडकरनगर द्वारा निर्धारित होती है। इस मण्डल की स्थिति इस प्रकार है कि यह मण्डल उत्तर में अन्तर्राट्रीय सीमा पूरब में प्रदेशीय सीमा एवं शेष भागों में जनपदीय सीमा से परिसीमित है। इस मण्डल में कुल चार जनपद, गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया एवं कुषीनगर सम्मिलित है, जिसमें गोरखपुर जनपद का क्षेत्रफल सर्वाधिक है। प्रशासनिक संगठन की दुष्टि से अध्ययन क्षेत्र पहले गोरखपुर जनपद का ही अंग था। 1946 में देवरिया, 1989 में महराजगंज, 1994 में कुशीनगर जनपदों का उदय हुआ। इसके अन्तर्गत 20 तहसीलें, 61 विकासखण्ड 610 न्याय जंचायत, 2983 ग्राम सभाएँ, 8378 राजस्व ग्राम (7637 आबाद 741 गैर आबाद) हैं।

आँकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र– प्रस्तुत शोध प्रपत्र में गोरखपुर मण्डल के औद्योगिक स्तर को ज्ञात करने के लिए द्वितीयक आंकड़ों का सहाए लिया गया है। ये आंकड़ें जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी कार्यालय (गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया, कुशीनगर), मण्डलीय अर्थ एवं संख्याधिकारी कार्यलय गोरखपुर एवं मण्डलीय उद्योग कार्यलय गोरखपुर से प्राप्त किए गये है। अध्ययन का विधितंत्र विश्लेषणत्मक है।

औद्योगिक स्तर का निर्धारण– औद्योगिक स्तर का निर्धारण करने के लिए कृषि उद्योग आधारित आंकड़ों का विश्लेषण एवं गहन अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की प्रमुखता है अतः सामान्यतया कृषि आधारित उद्योगों के विकास स्तर को ज्ञात करने के किए उपयुक्त सूचकांकों एवं तत्वों को आधार स्वरूप लेकर विकास खण्ड स्तर पर मात्रात्मक स्थिति के अनुरूप कोटि क्रमांक प्रदान किया गया है। इसके लिए सबसे अधिक के लिए एक तथा घटते क्रम के अनुसार दो, तीन, चार, पाँच आदि कोटियाँ प्रदान की गयी हैं। तत्पश्चात प्राप्त कोटियों का योग किया गया है। इस प्रकार प्राप्त योग में जो सबसे कम योग है वह सबसे अधिक विकरित औद्योगिक क्षेत्र तथा जिसका योग सबसे अधिक है वह सबसे कम विकास स्तर को प्रदर्शित करता है। उपरोक्त के आधार पर प्राप्त औद्योगिक विकास स्तर को अति उच्च, उच्च, मध्म, निम्न एवं अतिनिम्न श्रेणियों में विभक्त किया गया है।

औद्योगिक विकास स्तर– चरों का विशद अध्ययन करने के पश्चात चरों का उनके कोटि मूल्यों के आधार पर अंक प्रदान कर औद्योगिक विकास स्तर ज्ञात किया गया है। इस आधार पर प्राप्त औद्योगिक विकास स्तर को निम्नलिखित रूप में प्रदर्षित किया गया है। (तालिका) इस आधार पर अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक विकसित औद्योगिक क्षेत्र सहजनवा विकास खण्ड है जब कि दक्षिण भाग में स्थित लार विकास खण्ड सबसे न्यूनतम विकसित क्षेत्र के अन्तर्गत है।

तालिका

औद्योगिक विकास स्तर का वितरण प्रतिरूप

अनुक्रमता श्रेणी	सूचकांक	विकास खण्डों की संख्या	विकास खण्डों का प्रति शत
अति निम्न	150 से अधिक	31	50.81
निम्न	120—150	13	21.31
मध्यम	90—120	7	11.48
उच्च	60—90	7	11.48
अतिउच्च	60 से कम	3	4.92
योग	—	61	100.00

1. अति निम्न विकास स्तर– अति निम्न औद्योगिक विकास स्तर के अन्तर्गत वे विकास खण्ड शामिल है जहाँ सूचकांक 150 से अधिक है। अध्ययन क्षेत्र में 150 से अधिक सूचकांक वाले कुल 31 विकास खण्ड हैं जहाँ कृषिगत सुविधाएँ निम्न कोटि की हैं इस के अन्तर्गत पश्चिमी भाग में धानी एवं पाली पूर्वी भाग में तरकुलवां, बनकटा, विशुनपुरा रामपुर कारखाना, सेवरही, दुधही, पथरदेवा, दक्षिणी भाग में बड़हलगंज, बरहज, बेलघाट, एवं लार, उत्तरी भाग में नौतनवा, मिठौरा, नेबुआ नौरंगिया, लक्ष्मीपुर एवं निचलौल तथा मध्यवर्ती भाग में महराजगंज, गौरीबाजार, भटहट, बांसगाँव, रामकोला, ब्रह्मपुर, घुघली, भलुअनी, पिपरौली, परतावल, बैतालपुर एवं सिसवा विकास खण्ड सम्मिलित हैं।

2. निम्न विकास स्तर– निम्न औद्योगिक विकास स्तर के अन्तर्गत उन विकास खण्डों को रखा गया है जहाँ सूचकांक 120 से 150 के मध्य है। ऐसे कूल 13 विकास खण्ड है जो कुल विकास खण्डों का 21.31 प्रतिशत है। इस के अन्तर्गत पूर्वी भाग कें फाजिल नगर, तमकुही, भटनी एवं भाटपाररानी, उत्तरी भाग में खड्डा, पश्चिमी भाग में जंगल कौडिया, बृजमनगंज, ऊरुआ, दक्षिणी भाग में गोला एवं भागलपुर तथा मध्यवर्ती एवं मोतीचक विकास खण्ड सम्मिलित हैं।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

3. मध्यम विकास स्तर– 90 से 120 सूचकांक के अन्तर्गत आने वाले विकास खण्डों को मध्य औद्योगिक विकास स्तर में रखा गया है जिस में कुल सात विकास खण्ड सम्मिलित है जो कुल विकास खण्डों का 11.48 प्रतिषत है। इस के अन्तगर्त मध्यवर्ती भाग के कप्तानगंज, गगहा, कसया एवं सुकरौली, पश्चिमी भाग मे कैम्पियरगंज, तथा पूर्वी भाग के देसई दवरिया एवं पडरौना विकास खण्ड सम्मिलित हैं।

4. उच्च विकास स्तर– उच्च औद्योगिक विकास स्तर के अन्तर्गत वे विकास खण्ड शामिल है जहाँ सूचकांक 60 से 70 तक मिलता है। इस सूचकांक के अन्तर्गत कुल सात विकास खण्ड सम्मिलित हैं। इस के अन्तर्गत मध्यवर्ती भाग में हाटा, कौड़ीराम, चरगाँवा, एवं खोराबार पश्चिमी भाग में फरेन्दा, खजनी तथा पूर्वी भाग कें देवरिया सदर विकास खण्ड सम्मिलित हैं।

5. अति उच्च विकास स्तर– अति उच्च श्रेणी के विकास स्तर के अन्तर्गत कुल तीन विकाम खण्ड शामिल है जो कूल विकास खण्डों का 4.92 प्रतिषत है। यहाँ सूचकांक 60 से कम मिलता है। इस मे पश्चिमी भाग में सहजनवा दक्षिणी भाग में सलेमपुर एवं मध्यवर्ती भाग मे सरदार नगर विकास खण्ड सम्मिलित है।

उपर्युक्त विश्लेषण से प्रकट है कि अध्ययन क्षेत्र कें औद्योगिक विकास स्तर मे असमानता मिलती है जिसका मुख्य कारण क्षेत्र में मिलने वाली औद्योगिक सुविधाओं में विभिन्नता है। जिन क्षेत्रों कें औद्योगिक सुविधाएँ उच्च कोटि की हैं वे विकास खण्ड उच्च औद्योगिक विकास स्तर की श्रेणी के अन्तर्गत सम्मिलित हैं जब कि जिन विकास खण्डों में मिलने वाली सुविधाएँ निम्न कोटि की हैं वहाँ औद्योगिक विकास निम्न एवं अति निम्न स्तर का हो पाया है। इस प्रकार औद्योगिक विकास स्तर औद्योगिक सुविधाओं से पूर्णतः प्रभावित है। अध्यन क्षेत्र में औद्योगिक विकास की अपार सम्भावनाएँ है। आवश्यकता हैं उद्योगों के विकास से जुडे अवस्थापनात्मक सुविधाओ को बढ़ाने की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Kulshrestha, R.S. (1979) Indsutrial Econom ics, Sahitya Bhavan, Publication, Agra. P-3.
2. सिंह, के०एन० (2010) परिवहन भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर।
3. शाही, सुनील कुमार (1989) अवस्थापनात्मक तत्व एवं प्रादेशिक विकास, रूहेलखण्ड मैदान का प्रतीक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, गो०वि०वि० गोरखपुर।
4. सिंह, के०एन० एवं सिंह जे० (1991) आर्थिक भूगोल के मूलतत्व, ज्ञानोदय प्रकाशन, दाउदपुर, गोरखपुर पृ०–312.
5. सिंह, भगवती प्रसाद, (1990) उत्तर प्रदेश में औद्योगीकरण एवं प्रादेशिक विशमता, अप्रकाशित शोध प्रबंध, भूगोल विभाग, गो०वि०वि० गोरखपुर, पृ०–145 .

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14